ज्ञान के साथ संस्कार आव यक : आचार्यश्री महाश्रमण
केलवा में चातुर्मास, महाप्रज्ञ अलंकरण समारोह का आयोजन
केलवाः 8 नवंबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधि ास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ संस्कार की भी आव यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि आज के परिवे ा में यह जरुरी है कि युवा पीढी हमारे संस्कारों से विमुख न हो। संस्कारों से बच्चों में भावनात्मक संपन्नता आती है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान मंगलवार को विद्यार्थियों और श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने ज्ञान को जीवन में आलोक बिखेरने वाला बताते हुए कहा कि आदमी में ज्ञान की परिणति होनी चाहिए। हमारे आचार भ्ाुद्ध और निर्मल बने रहे। इसकी आज के परिवे ा में महत्ती आव यकता है। बच्चों को स्कूली जीवन के दौरान ही संस्कार का बीजारोपण किया जाए तो इसका भविश्य में फल भी अच्छा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान विशय जीवन जीने की कला सिखाता है। जीवन में संकल्प का विकास हो। आचार्यश्री तुलसी की ओर से भ्ारू किया गया अणुव्रत आन्दोलन एवं जीवन विज्ञान धार्मिकता, आध्यात्मिकता एवं नैतिकता का भाव पुश्ट करने वाली गतिविधि है।

उन्होंने कहा कि गुरु द्वारा यदा कदा व्यक्त की जाने वाली कठोर बातों, उलाहना, परिशद् के बीच डांटने की प्रवृति को विनयपूर्वक ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो हमारा जीवन सार्थक हो सकता है। गुरु को इस बात का अधिकार होता है कि वह अपने िाश्य और समाज के किसी व्यक्ति को गल्ती करने पर उलाहना दे सकता है। जो िाश्य अपने गुरु की डांट को सह लेते है। गुस्से और आवे ा में नहीं आता। वह महानता की ओर अग्रसर होता है। संघ में ऊंचे ओहदे पर आसीन होने का मौका मिलता है। हमारे धर्म संघ में साधु–साध्वियां गुरु के उलाहने का अमृत समझकर स्वीकार करते है।

प्रमाद से दूर रहने का प्रयास हो

आचार्यश्री ने संबोधि के छठे अध्याय में उल्लेखित प्रमाद और अप्रमाद को परिभाशित करते हुए कहा कि कर्म बंधन का एक कारण प्रमाद को माना गया है। यह दो तरह के होते है आंतरिक और आध्यात्मिक। जो विरक्ति और संयम से आदमी पंडित कहा जाता है। जिस व्यक्ति में असंयम की भावना हो वह बाण कहलाता है और जिसमें संयम की भावना पुश्ट हो वह स्वयं का संयमी होता है और पंडित कहलाता है। भ्ास्त्रों में इसकी परिभाशा इस तरह से की गई है कि ढाई अक्षर प्रेम के जो सीख जाता है वह पंडित

कहलाता है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति दूसरे को प्रेरणा प्रदान करने वाला बनता है वह व्यक्ति जीवन में विकास के पथ पर अग्रसर होता है। मनुश्य को भी चाहिए कि वह लोगों को कुछ न कुछ करने की प्रेरणा प्रदान करता रहे। इससे स्वयं के साथ दूसरों का भी विकास संभव हो सकेगा। इससे व्यक्ति में तेजस्विता बढती है।

आचार्यश्री ने सामान्य आदमी से साधु को ऊंचा बताते हुए कहा कि साधु में व्यक्ति के मुकाबले ज्यादा त्याग और संयम की भावना होती है। तेरापंथ धर्म संघ में दो बार प्रतिक्रमण करने की विधि है। यह अच्छी परपंरा है। इसे साधारण नहीं समझा जाए। यह सम्मान और निर्मलता बढाने वाली होती है। प्रतिक्रमण को एक तरह का स्नान बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि जिस तरह से व्यक्ति अपने जीवन को स्वच्छ बनाने के लिए स्नान करता है उसी तरह साधु भी प्रतिक्रमण कर इस विधि को पूरा करता है। वह अपनी आत्मा का स्नान करता है। हाजरी भी अमृतवाणी की भांति होती है।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि व्यक्ति आध्यात्मिकता में जितना ज्यादा रहने का प्रयास करता है उतनी ही उसे आनंद की अनुभूति होती है। मनुश्य को धर्म की ओर बढने की आव यकता है इससे समाज और दे ा का विकास संभव हो सकेगा। इस अवसर पर मुनि नीरजकुमार, प्रमोद मूथा ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

राजसमंद का विजेन्द्र प्रथम
भिक्षु को जानो प्रतियोगिता के परिणाम घोशित

तेरापंथ धर्म संघ की उद्‌गम स्थली में आयोजित भिक्षु को जानों प्रतियोगिता में राजसमंद के विजेन्द्र मादरेचा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। चार चरणों में आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान राजसमंद के ही आ ीश दक तथा तृतीय छोटी खांटू के संदीप भण्डारी रहे। इनके अलावा दिल्ली के मनीश पुगलिया, कि ानगढ के राहुल छाजेड, सरदार ाहर के चन्द्र प्रका ा सेठिया, गंगा ाहर के देवेन्द्र डागा, उदयपुर के हेमंत जैन, दिल्ली के दीपक पुगलिया का भी प्रद ान संतोशजनक रहा। प्रतियोगिता में अहमदाबाद, दिल्ली, कि ानगढ, हुबली, सिल्चर, जयपुर, अजमेर, जलगांव, नाथद्वारा, श्रीडूंगरगढ, आमेट, केलवा, आसाम, उदयपुर, राजसमंद, कांकरोली, ि ा ोदा, आसींद आदि क्षेत्रों के युवकों ने भाग लिया।